प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

शक्ति के अभाव में विश्वास व्यर्थ है। विश्वास और शक्ति, दोनों किसी महान काम को करने के लिए आवश्यक हैं।
- सरदार पटेल

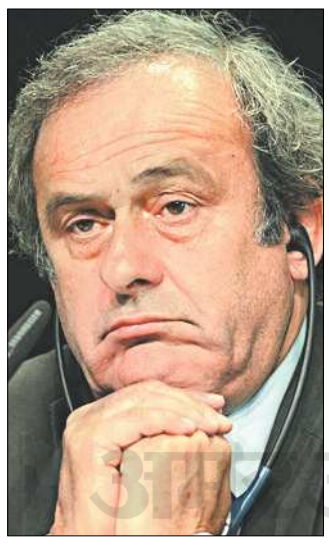

बीते दौर में अपनी असाधारण खेल प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध रहे माइकल प्लाटिनी को भ्रष्टाचार के आरोप में जिस तरह हिरासत में लिया गया, वह एक खेल प्रशासक के तौर पर उनके भ्रष्ट और विवादास्पद होने की ही पुष्टि करता है।

शिखर से पतन

कतर को फुटबॉल विश्व कप की मेजबानी सौंपने के विवादास्पद फैसले के सिलसिले में माइकल प्लाटिनी को फ्रांस की भ्रष्टाचार निरोधक संस्था द्वारा हिरासत में लेने को खेल की दुनिया में भ्रष्टाचार का एक और मामला कहकर खारिज नहीं किया जा सकता, बल्कि यह शिखर से पतन का एक दुर्लभ उदाहरण है। प्लाटिनी कोई साधारण फुटबॉलर नहीं थे। अपने शानदार फ्री किक में से अधिकांश को गोल में तब्दील करने वाले और अद्भुत ड्रिब्लिंग से प्रतिपक्ष को हैरान कर देने वाले इस मिडफील्डर ने बीती सदी के उत्तरार्ध में फ्रांस के फुटबॉल को ऐसी गौरवशाली पहचान दिलाई कि बाद में जिनेदिन जिदान जैसे फुटबॉलर उनका अनुकरण कर ही आगे बढ़े। प्लाटिनी जितने महान फुटबॉलर थे, प्रशासक के तौर पर उतने ही ताकतवर बने, और वहीं से उनके पतन की गाथा शुरू हुई। दरअसल 2022 के विश्व कप की मेजबानी कतर को सौंपने के फैसले ने, तब प्लाटिनी फीफा के उपाध्यक्ष थे, फुटबॉल की दुनिया को हैरान कर दिया था, क्योंकि बेहद गर्म मौसम के अलावा कतर का फुटबॉल में प्रदर्शन भी साधारण रहा है। कतर पर विश्व कप की मेजबानी के लिए वोट खरीदने का आरोप लगा, और स्वतंत्र अमेरिकी जांचकर्ता माइकल गार्सिया की रिपोर्ट में कई संदिग्ध वित्तीय लेन-देन का भी खुलासा हुआ। बाद में फीफा के तत्कालीन और विवादास्पद अध्यक्ष सैप ब्लाटर ने खुलासा किया कि फ्रांस के साथ सौदेबाजी के तहत कतर को मेजबानी मिली, जिसमें तत्कालीन फ्रेंच राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी, कतर के शहजादे और फीफा के उपाध्यक्ष प्लाटिनी की साठगांठ थी। प्लाटिनी के भ्रष्टाचरण की पुष्टि इससे भी हुई कि उनके बेटे को कतर के स्वामित्व वाली एक स्पोर्ट्स कंपनी में मुख्य कार्यकारी का पद मिला। हिरासत में लेने के बाद प्लाटिनी को हालांकि छोड़ दिया गया है, लेकिन इसे उनकी निर्दोषिता का प्रमाण मानने का सवाल ही नहीं है, क्योंकि इस विवाद से पहले फीफा का अध्यक्ष पद न स्वीकारने के एवज में उन पर सैप ब्लाटर से बीस लाख डॉलर की रिश्वत लेने का आरोप लगा था, जिस कारण उन्हें चार साल के लिए निलंबित भी किया गया था। खेल में भ्रष्टाचार कोई नई बात नहीं है, लेकिन माइकल प्लाटिनी जैसा व्यक्ति अगर भ्रष्टाचार के मामलों में बार-बार फंसता और दंडित होता है, तो इससे खिलाड़ियों को नायक मानने की मानसिकता खंडित होती है।

नेपाल में चीन की भाषायी कूटनीति

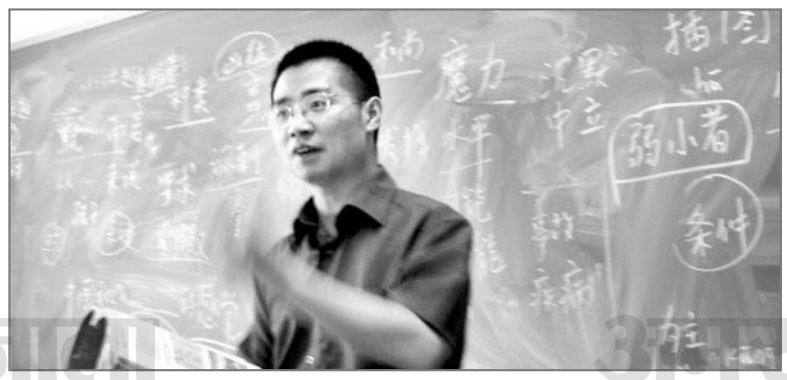

अब चीन ने भाषा को अपना कूटनीतिक हथियार बनाया है और नेपाल के निजी स्कूलों को मुफ्त में भाषा सिखाने वाले शिक्षक उपलब्ध कराने का लालच दिया है।

शशांक, पूर्व विदेश सचिव

हमारे पड़ोसी देश नेपाल में चीन लगातार अपनी दखल बढ़ाता जा रहा है। आर्थिक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश के बाद अब उसने भाषा को अपना कूटनीतिक हथियार बनाया है और अपनी मंडारिन भाषा को बढ़ावा देने के लिए नेपाल के निजी स्कूलों को मुफ्त में भाषा सिखाने वाले शिक्षक उपलब्ध कराने का लालच दिया है। मीडिया में छपी खबरों के मुताबिक, नेपाल के कई बड़े निजी स्कूलों ने अपने यहां के छात्रों के लिए मंडारिन भाषा की पढ़ाई को अनिवार्य बना दिया है। नेपाल स्थित चीनी दूतावास ने यह प्रस्ताव दिया है कि वह स्कूलों को मंडारिन पढ़ाने वाले अच्छे शिक्षक उपलब्ध कराएगा। यही नहीं, दूतावास ने उन शिक्षकों का वेतन देने का प्रस्ताव भी रखा है और कहा है कि उन शिक्षकों के रहने और खाने-पीने आदि की व्यवस्था स्कूल प्रबंधन स्वयं करे।

दरअसल काफी समय से नेपाल अपने देश में रोजगार सृजन के लिए कोई स्थायी उपाय की तलाश में है। चीन से करीब डेढ़ लाख यात्री हर वर्ष नेपाल पर्यटन के लिए आते हैं, लेकिन नेपाल इस आंकड़े को दस लाख के आसपास पहुंचाना चाहता है। इसके लिए जरूरी है कि नेपाल के लोगों को चीनी भाषा की ज्यादा जानकारी हो, जो चीन से आने वाले पर्यटकों के लिए गाइड का काम कर सकें। पहले भी कुछेक सौ लोग नेपाल से स्कॉलरशिप पर मंडारिन भाषा सीखने चीन जाते रहे हैं। लेकिन हाल के वर्षों में चीन के साथ नेपाल के रिश्ते में प्रगाढ़ता आई है, चीन ने बेल्ट ऐंड इनीशिएटिव रोड परियोजना से नेपाल को जोड़ा है और नेपाल ने भी सक्रियतापूर्वक इसे अपनाया है। अब मंडारिन भाषा की अनिवार्य पढ़ाई इसमें एक नया पहलू है। जाहिर है, इसका असर नेपाल और चीन के रिश्तों पर तो पड़ेगा ही, भारत पर भी पड़ेगा।

हाल के वर्षों में चीन ने हमारे दूसरे पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से भी नजदीकी बढ़ाई है, लेकिन पाकिस्तान को इस तरह का प्रस्ताव नहीं दिया गया है। संभवतः इसकी मुख्य वजह यह है कि चीन नेपाल के साथ भारत के रिश्तों और हितों को नुकसान पहुंचाना चाहता है। नेपाल-भारत के बीच रोटी-बेटी के रिश्ते हैं। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा है, वहां के लोग भारत में बिना वीजा के आकर आराम से काम कर सकते हैं। तो चीन इन रिश्तों को प्रभावित करके वहां अपना दूरगामी हित साधना चाहता है। दरअसल चीन जानता है कि भारत का झुकाव हाल के वर्षों में अमेरिका के प्रति बढ़ा है, जिससे चीन के हितों को नुकसान पहुंच सकता है, क्योंकि अमेरिका दक्षिण एशिया में चीन की विस्तारवादी नीतियों पर अंकुश लगाने के लिए भारत का सहारा लेना चाहता है। इसलिए चीन भारत के पड़ोसी देशों में अपना प्रभाव बढ़ाकर भारत को घेरने की कोशिश कर रहा है। अभी तक चीन ने जिन-जिन देशों में निवेश किया है और जिन देशों के साथ सांस्कृतिक संबंध बढ़ाने की कोशिश की है, वहां-वहां से चीन के लोगों के रहन-सहन के ढंग को लेकर शिकायतें आई हैं। उन देशों में चीन को मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। यहां तक कि पाकिस्तान में भी चीनी नागरिकों पर हमले हुए हैं। अब यह देखना होगा कि नेपाल में पढ़ाने जाने वाले चीनी शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार होता है।

हलांकि नेपाल की सरकार के शिक्षा विभाग ने कहा है कि मंडारिन भाषा को अनिवार्य करने का तो सवाल ही नहीं उठता है, क्योंकि किसी भी भाषा की पढ़ाई अनिवार्य करने का अधिकार शिक्षा विभाग को है, स्कूलों को नहीं। नेपाल में विदेशी भाषा की पढ़ाई का प्रावधान तो है, लेकिन उसे अनिवार्य नहीं किया गया है। शिक्षा विभाग ने जो पाठ्यक्रम तैयार किए हैं, पढ़ाई उसी के अनुरूप होनी चाहिए। विदेशी भाषा की पढ़ाई अतिरिक्त समय में होगी। लेकिन शिक्षा विभाग जो भी कहे, जमीनी वास्तविकता से वह भी वाकिफ है, क्योंकि चीन ने यह प्रस्ताव वहां की सरकार को ही दिया है। नेपाल में रोजगार संकट के कारण पलायन की भारी समस्या है। वहां की सरकार चाहती है कि रोजगार या अन्य मदद के लिए सिर्फ भारत पर निर्भर न रहा जाए। चीन दुनिया की उभरती हुई आर्थिक ताकत है, तो नेपाल सोचता है कि क्यों न चीन से कुछ फायदा उठाया जाए। भारत पर निर्भरता कम करने तथा भारत के बिग ब्रदर वाले रवैये को संतुलित करने के लिए भी नेपाल चीन का कार्ड खेलता रहा है। लेकिन अब वह बहुत आगे बढ़ रहा है। भारत को विभिन्न चैनलों के माध्यम से नेपाल के लोगों तक यह संदेश पहुंचाना चाहिए कि जिन देशों में चीन का प्रभुत्व ज्यादा बढ़ा है, उन देशों का अनुभव अच्छा नहीं रहा है। ऐसा न हो कि जब तक उन्हें इन चीजों की जानकारी मिले, तब तक बहुत देर हो जाए। भाषा सीखना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन चीन की नीयत को भी ध्यान में रखने की जरूरत है। भारत को भी नेपाल में प्रचलित भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। वहां जो भी भारतीय भाषाएं हैं-हिंदी, मैथिली, भोजपुरी, उन सबसे जुड़ी संस्थाओं को उन भाषाओं को आगे बढ़ाने के लिए मदद दी जानी चाहिए। वहां जो लोग भारतीय भाषाएं पढ़ना चाहते हैं, उन्हें हर तरह की मदद मिलनी चाहिए।

इसके अलावा भारत जब भी किसी देश के साथ किसी परियोजना पर कोई समझौता करता है, तो उसे उसकी पूरी तैयारी पहले से कर लेनी चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि समझौते हो जाते हैं, लेकिन परियोजना की राशि नौकरशाही की उलझनों में फंसकर रह जाती है, जबकि चीन पूरी तैयारी के साथ दूसरे देशों से समझौते करता है। नेपाल की यह शिकायत रही है कि उसे समय से मदद नहीं मिल पाती है और नेपाल को बराबर की इज्जत नहीं दी जाती है। तो भारत को इस दिशा में भी सोचना पड़ेगा।

मुझे नहीं लगता कि नेपाल में मंडारिन की पढ़ाई अनिवार्य होने से भारत के हितों को तत्काल कोई नुकसान होगा, लेकिन दीर्घकाल में जरूर हो सकता है। इसलिए हमें अभी से सजग हो जाना चाहिए और देखना चाहिए कि हमारे सांस्कृतिक, सामरिक, इन्फ्रास्ट्रक्चर संबंधी हितों को कहीं नुकसान तो नहीं पहुंच रहा है। नेपाल में जो हमारी मित्र संस्थाएं है, उन्हें हम साथ लेकर आगे बढ़ें। उन्हें यह नहीं लगना चाहिए कि भारत अपने हित के लिए काम कर रहा है, बल्कि यह लगना चाहिए कि नेपाल के हित के लिए काम कर रहा है, और उसमें भारत को भी फायदा हो रहा है।

अंतर्ध्वनि

>> राजकमल चौधरी

परिश्रम और प्रतिभा अपने आप आदमी को अकेला बना देती है

सफल होना मेरे लिए संभव नहीं है। मेरे लिए केवल संभव है—होना। कवियों का स्थान निर्धारण या मूल्यांकन मैंने कभी नहीं किया। कभी कर पाऊंगा भी नहीं, क्योंकि 'सफल', 'समर्थ' अथवा 'महान' होने को मैं कोई महत्व नहीं देता। मैं महत्व देता हूं 'प्रिय' होने को। और जरूरी नहीं है कि जो कवि मुझे प्रिय हो, वही कवि आपको भी प्रिय हो। प्रकृति, आदर्श, जीवन-मूल्य, परंपरा, संस्कार, चमत्कार—इत्यादि से मुझे कोई मोह नहीं है। मेरी कविता की इच्छा और मेरी कविता की शब्दावली, मेरी अपनी इच्छा और मेरी अपनी शब्दावली है। शून्य में भी कविता अपने शरीरी और अशरीरी व्यक्तित्व का स्थापन और प्रसार करती है। मुक्ति-प्रयास ही कविता का धर्म है। कविता का संगीत शब्द-ध्वनि का संगीत नहीं है, अर्थ-संकेत (इसे रीतिकालीन 'अर्थ-संकेत' के अर्थ में ग्रहण नहीं किया जाए) और अर्थ-विस्तार का संगीत है। कविता हमारे लिए भावनाओं का माया-जाल नहीं है। जिनके लिए कविता ऐसी थी, वे लोग बीत चुके हैं। परिश्रम और प्रतिभा आप-ही-आप आदमी को अकेला बना देती है। उसे दूसरों का साथ करने का अवकाश नहीं देती। इतना समय भी नहीं कि वह दूसरों के आलस्य, आराम, शौक, भावुकताओं का हिस्सेदार बन सके। परिश्रम आदमी को भीड़ बनने, और प्रतिभा भीड़ में खो जाने की इजाजत नहीं देती।

मनुष्य होना मेरी नियति थी, और लेखक मैं स्वेच्छा से, अर्जित प्रतिभा और अर्जित संस्कारों से हुआ हूं। मेरे लेखक के लिए सबसे बुरी बात यह रही कि अपने समकालीन अधिकांश लेखकों से अर्थात उनकी निजी जिंदगी से मेरा व्यक्तिगत संपर्क रहा है। यश-प्रतिष्ठा और रचना का मूल्य अच्छा लिखने से नहीं, यश और मूल्य देने वाले लोगों की इच्छा के अनुसार लिखने से मिलता है। दोहरी जिंदगी की सुविधाओं से मुझे प्रेम नहीं है।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> प्रसन्नपुरी गोस्वामी

प्रकृति प्रेम के चलते ऊसर भूमि को बनाया उद्यान

जोधपुर-मारवाड़ सरीखे सूखे और चट्टानी इलाके में पौधे रोपना तो क्या बीज टिकाना भी बेहद चुनौती भरा काम है। यहीं संत चिड़ियानाथ की पहाड़ी पर प्रसिद्ध मेहरानगढ़ दुर्ग है। किले से थोड़ी ही दूरी पर जसवन्तथड़े की घाटी, खेजड़ी चौक में मेरा घर है। मुझे बचपन से ही पेड़ों के झुरमुट अच्छे लगते थे। मैं इन पहाड़ियों की बरसाती सरंचना से अच्छी तरह परिचित था। इसी के चलते मुझे बरसाती झरनों की दिशा और ढलान के अनुकूल पौधारोपण करने में आसानी रही। तब मैं एक स्कूल में पढ़ाता था। खाली समय में अपने मित्रों के साथ किले की घाटी पर नियमित घूमता था। एकदिन बातचीत के दौरान पौधारोपण की बात चल पड़ी। प्रस्ताव तो बहुत अच्छा था। पर जब करने की बारी आई, तो मौन पसर गया। लेकिन मैंने ठान लिया कि इस विचार को खामोश नहीं होने देना है।

अपने पवित्र संकल्प के लिए मैंने एक उचित जगह देखकर कुछ पौधे रोप दिए। बरसाती दिनों में वह खिल उठा। इसके बाद कुछ मित्र इस कार्य में शामिल हुए तो एक-एक कर सैकड़ों पौधे रोपता गया। शुरुआत में कुछ लोगों ने मेरी मेहनत को व्यर्थ बताया, और कहा कि, देखो ये पहाड़ों, पत्थरों पर फूल खिलाने आए हैं। लेकिन मौके पर खिले पौधों ने उनकी बोलती बंद कर दी।

34 वर्ष की मेहनत का नतीजा है कि करीब 22 हेक्टेयर से भी अधिक भूमि पर आज हरियाली है।

इसके बाद जहां चाह, वहां राह के विचार के साथ मैंने किले के आसपास बरसाती झरनों और चट्टानी गढ़ढों से रिसते पानी के सहारे पौधे रोप दिए। लेकिन, अन्य महीनों में पौधों को पानी कहां से मिले? इसके लिए मैंने पेयजल सप्लाई की पाइप लाइन के रिसाव का पानी भी काम में लिया, कुछ दिन बाद वह भी बंद हो गया। मैं कभी इस इलाके में बनी प्याऊ से पानी लाता, तो कभी दूर भरे हुए छोटे पहाड़ी तालाब से पानी लाकर पौधे सींचता। धीरे-धीरे पौधे बड़े होने लगे। मुझे उन पौधों से इतना लगाव हो गया कि मैं उनसे अलग नहीं रह सकता था।

इस बीच तबादले के चलते मैं जालौर चला गया। लेकिन पेड़-पौधों की हिफाजत का जिम्मा मैंने अपने छोटे बेटे प्रमोदपुरी को सौंप दिया। लेकिन एक दिन पौधों पर दवा स्प्रे करते समय एक दुर्घटना के चलते उसकी मौत हो गई। इस घटना ने मुझे झकझोर कर रख दिया। वह वृक्षप्रेमी था और प्रकृति संरक्षण करते हुए उसकी मौत हुई। उसकी प्रकृति मित्र भावना के बलबूते ही मैं आज 72 वर्ष की उम्र में भी इस पहाड़ी पर चढ़ता-उतरता हूं। मैंने आज भी पौधारोपण करना छोड़ा नहीं है, उल्टा मेरा दायित्व कई गुना बढ़ गया है। मुझे उसके हिस्से की भी मेहनत करनी पड़ रही है। मेरे इस काम में धीरे-धीरे सहयोगी जुटते चले गए, तो मैंने इस अभियान को 'मेहरानगढ़ पहाड़ी पर्यावरण विकास समिति' के नाम से शुरू किया। बाद में मैंने पहाड़ों पर फैले इस उद्यान का नाम 'राव जोधा प्रकृति उद्यान' रख दिया। इन पहाड़ों पर मैंने 13 किस्मों की बोगनवेलिया और 50 किस्मों के गुलाब भी उगाए हैं। लोगों में पर्यावरण प्रेम जगाने के उद्देश्य से मैंने सरकारी विभागों के अधिकारियों और मंत्रियों का इस ओर ध्यान दिलाया, जिसकी वजह से आज यहां अनेक लोगों द्वारा रोपे गए पौधे लहलहा रहे हैं। वर्ष 2008 में सेवानिवृत्त होने के बाद से ही मेरी दिनचर्या इस पेड़- पौधों के बीच ही सिमट गई है। मेरे अभियान में जिला प्रशासन के साथ कई संस्थाओं को योगदान रहा है। मेरा मानना है कि यदि आप किसी काम में जी-जान लगाकर जुट जाते हैं तो, व्यवस्थाएं तो अपने आप होती चली जाती हैं। 34 वर्ष पहले शुरू की गई मुहिम का खूबसूरत नतीजा यह है कि करीब 22 हेक्टेयर से भी अधिक नंगी पहाड़ी ढलानों पर आज हरियाली है।

जल आपातकाल से जूझता चेन्नई

आज मसला केवल चेन्नई के जल-संकट का नहीं, बल्कि देश के अधिकांश शहरों के अस्तित्व का है। और ये तभी सुरक्षित रहेंगे, जब वहां की जल निधियों को उनका पुराना वैभव व सम्मान वापस मिलेगा।

पंकज चतुर्वेदी

वैसे तो चेन्नई भारत के पुराने प्रगतिशील शहरों में गिना जाता है, लेकिन इन दिनों वहां 'जल -आपातकाल' का प्रकोप है। शहर के लगभग सभी बड़े रेस्त्रां ने अपने काम करने के समय को कम कर दिया है। बैठकर खाने के बजाय घर ले जाने वालों को छूट दी जा रही है। चेन्नई होटल एसोसिएशन के मुताबिक, पानी की कमी के चलते शहर के कोई पचास हजार छोटे व मध्यम होटल-रेस्त्रां गत पंद्रह दिन से बंद हैं और इससे हजारों लोग बेरोजगार हो चुके हैं। महानगर के विश्व प्रसिद्ध आईटी कॉरिडोर ओल्ड महाबलीपुरम रोड (ओएमआर) की साढ़े छह सौ से अधिक आईटी कंपनियों ने अपने बीस हजार से ज्यादा कर्मचारियों को घर से काम करने या फिर कंपनी के हैदराबाद या बंगलूरू स्थित कार्यालयों से काम करने के निर्देश दे दिए हैं। कुल मिलाकर शहर में पानी बचा ही नहीं है।

कोई नब्बे लाख की आबादी के शहर में पानी के नल हफ्तों से सूखे हैं और बारह हजार लीटर का एक टैंकर पांच हजार में खरीद कर लोग काम चला रहे हैं। कभी लगता है कि समुद्र तट पर बसा ऐसा शहर, जहां चार बड़े-बड़े जलाशय और दो नदियों थीं, आखिरकार पानी की हर बूंद के लिए क्यों तरस गया? गंभीरता से देखें, तो यह प्यास समाज के कथित विकास की दौड़ में खुद के द्वारा ही कुचली-बिसराई व नष्ट कर दी गई पारंपरिक जल निधियों के लुप्त होने से उपजाई है। और इसका निदान भी जल के लिए अपनी जड़ों की ओर लौटना ही है। सरकार कह रही है कि गत तीन सालों में चेन्नई मेट्रो वाटर को 2638.42 करोड़ रुपये दिए गए, लेकिन जमीनी हकीकत तो यह है कि डाले गए पाइप या टंकियां तब तक काम की नहीं हैं, जब तक कि जल स्रोत न हो।

कभी समुद्र के किनारे का छोटा-सा गांव मद्रासपट्टनम आज भारत का बड़ा नगर है। अनियोजित विकास, शरणार्थी समस्या और जल निधियों की उपेक्षा के चलते आज यह महानगर एक बड़ी झुग्गी में बदल गया है। नवंबर-2015 में आई भयानक बाढ़ के बाद तैयार की गई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट की रिपोर्ट में बताया गया है कि 650 से अधिक जल निधियों में कूड़ा भरकर चौरस मैदान बना दिए गए। यही वे पारंपरिक स्थल थे, जहां बारिश का पानी टिकता था और जब उनकी जगह समाज ने घेर ली तो पानी समाज में घुस गया। उल्लेखनीय है कि नवंबर-15 की बारिश में सबसे ज्यादा दुर्गति दो पुरानी बस्तियों-वेलाचेरी और तारामणि की हुई। वेलाचेरी यानी वेलाय-ऐरी। तमिल में ऐरी का अर्थ है तालाब व मद्रास की ऐरी व्यवस्था सामुदायिक जल प्रबंधन का अनूठा उदाहरण रही हैं। आज वेलाय ऐरी के स्थान पर गगनचुंबी इमारतें हैं। चेन्नई शहर की खूबसूरती व जीवन रेखा कहलाने वाली दो नदियों- अडयार और कूवम के साथ समाज ने जो बुरा सलूक किया, प्रकृति ने इस गर्मी में उसी का मजा जनता को चखाया।

अडयार नदी शहर के दक्षिणी इलाके के बीचों-बीच से गुजरती है और जहां से गुजरती है वहां की बस्तियों का कूड़ा और गंदगी अपने साथ ले जाकर एक बदबूदार नाले में बदल जाती है। तो कूवम नदी चेन्नई शहर में अरुणाबक्कम नामक स्थान से प्रवेश करती है और फिर 18 किलोमीटर तक शहर के ठीक बीचों बीच से निकल कर बंगाल की खाड़ी में मिलती है। इसके तट पर चूलायमेदू, चेरपेट, एग्मोर, चिंतारीपेट जैसी पुरानी बस्तियां हैं और इसका पूरा तट मलिन व झोपड़-झुग्गी बस्तियों से पटा है। इस तरह कोई 30 लाख लोगों का जल-मल सीधे ही इसमें मिलता है। कहने की जरूरत नहीं है कि यह कहीं से नदी नहीं दिखती।

आज मसला केवल चेन्नई के जल-संकट का नहीं, बल्कि देश के अधिकांश शहरों के अस्तित्व का है। और ये तभी सुरक्षित रहेंगे, जब वहां की जल निधियों को उनका पुराना वैभव व सम्मान वापस मिलेगा।

हरियाली और रास्ता

कर्मचारी और गलतफहमी

नए मैनेजिंग डायरेक्टर की कहानी, जिसने अपने कर्मचारियों की संवेदना की परख के लिए अनूठा तरीका अपनाया।

बालदा हाउस खचाखच भरा हुआ था। हो भी क्यों न। कंपनी की पचासवीं सालगिरह जो थी। किराये के एक कमरे से कंपनी अब सौ करोड़ रुपये की हो चुकी थी। इसी का जश्न मनाने के लिए कंपनी ने अपने कर्मचारियों को बालदा हाउस बुलाया था। कंपनी के नए मैनेजिंग डायरेक्टर का भी एलान होना था। सभी लोग एक बड़े से हॉल में प्रवेश कर रहे थे। पर हॉल के बाहर फटा-सा कंबल सिर पर ओढ़े बैठा एक व्यक्ति खुशनुमा माहौल का मजा किरकिरा कर रहा था। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं था, जिसने हॉल में घुसते हुए उस व्यक्ति की तरफ गौर से न देखा हो। कुछ देर में हॉल के दरवाजे बंद हो गए और कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सरस्वती वंदना और कुछ नृत्य-नाटक के कार्यक्रम के बाद कंपनी के एक आला अधिकारी ने नए मैनेजिंग डायरेक्टर को मंच पर बुलाया। हॉल में सन्नाटा छाया था। तभी पीछे से वही व्यक्ति मंच की तरफ बढ़ने लगा, जिसे थोड़ी देर पहले लोगों ने कंबल ओढ़े बाहर बैठे देखा था। सबकी नजरें उस व्यक्ति पर टिकी थीं। लोग सोच रहे थे, क्या यही है नया मैनेजिंग डायरेक्टर। मंच पर आकर वह शख्स बोला, मेरा नाम है महेश शर्मा और मैं आपका नया मैनेजिंग डायरेक्टर हूं। वहां बैठे सारे कर्मचारी हैरान रह गए। कुछ लोगों को अपनी सोच पर अफसोस भी हुआ। महेश शर्मा बोले, मुझे पता है कि आप में से कई लोग सोच रहे होंगे कि मैंने यह वेशभूषा क्यों धारण की? ऐसा मैंने दूसरों के प्रति आपकी संवेदना को परखने के लिए किया। मैं आप सब से बस इतना ही कहूंगा कि भले ही हमारे कर्म कोई न देख रहा हो, लेकिन हमारा उत्तरदायित्व समाज और किसी अन्य व्यक्ति नहीं, बल्कि सिर्फ अपने आप के लिए होता है। वहां बैठे सभी लोग उनके विचारों से अभिभूत हो गए।

किसी को देखकर कोई भी धारणा बना लेना गलत है।

खुली खिड़की

विश्व में परमाणु हथियार

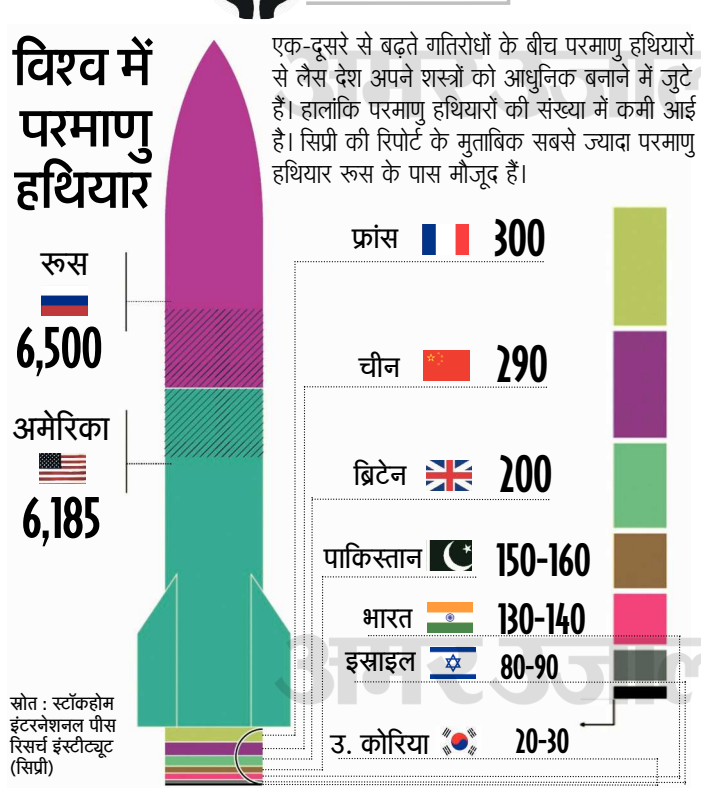

एक-दूसरे से बढ़ते गतिरोधों के बीच परमाणु हथियारों से लैस देश अपने शस्त्रों को आधुनिक बनाने में जुटे हैं। हालांकि परमाणु हथियारों की संख्या में कमी आई है। सिप्री की रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा परमाणु हथियार रूस के पास मौजूद हैं।

स्रोत : स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सिप्री)

सुपात्र की पहचान

संत ज्ञानेश्वर अपने प्रवचन में कह रहे थे, ईश्वर उन्हीं को भक्ति और विवेक देते हैं, जो उसके लायक होते हैं। परमात्मा की कृपा प्राप्त करने के लिए सुपात्र होना पड़ता है। एक स्त्री ने खड़े होकर सवाल किया, पर महाराज, ऐसा कैसे हो सकता है? ईश्वर को तो अपनी कृपा देने में भेदभाव नहीं करना चाहिए। संत ज्ञानेश्वर ने उस महिला को कहा, आपको इस सवाल का जवाब मिल जाएगा। यह कहकर उन्होंने अपना प्रवचन जारी रखा। अगले दिन उन्होंने एक मूर्ख व्यक्ति को उस महिला के पास भेजा और कहा, उनसे उनके सारे आभूषण कुछ दिनों के लिए उधार ले आओ। उस आदमी ने उस महिला के पास जाकर कुछ दिनों के लिए आभूषण उधार मांगे। महिला ने उसे वहां से भगा दिया। अगले दिन खुद संत ज्ञानेश्वर उस महिला के पास पहुंचकर बोले, देवी, मुझे कुछ पैसों की जरूरत है। अगर आप अपने आभूषण कुछ दिनों के लिए मुझे उधार दें, तो बड़ी कृपा होगी। महिला ने संत की आवभगत की, फिर आभूषण दे दिए। संत ने कहा, आपको अपने सवाल का जवाब मिल गया। कल जो आदमी आपसे आभूषण मांगने आया था, उसे आपने आभूषण नहीं दिए, क्योंकि आपको वह सुपात्र नहीं लगा। पर मुझे आपने आभूषण दिए, क्योंकि आपकी नजर में मैं सुपात्र हूं। जब हम सुपात्रों का ध्यान रखते हैं, तो ईश्वर क्यों नहीं रखेगा? यह कहकर संत ने उस महिला के आभूषण लौटा दिए।

सत्संग

-संकलित